श्री शत्रुंजय - मुक्ति सम्यग्ज्ञान अभ्यासक्रम

तृतीय वर्ष - अभ्यास - १०

मार्च - 2025

प्रश्न - पत्र

गुणांक - १००

सूचना : १. नाम और इनरोलमेंट नंबर बिना का पेपर रद्द किया जायेगा । २. लाल स्याही के पेन का उपयोग न करें । ३. समझ में न आये ऐसे अक्षरों वाले जवाब पत्र जांचे नही जायेंगे । ४. जवाब पत्र में ही योग्य खाने में जवाब लिखना है, साथ में दूसरा पेपर जोडना नही है, जोडने पर तीन मार्क्स काट लिये जायेंगे । ५. जवाब पत्र हर महिने की ता. २५ तक भेजना जरुरी है, आगे-पीछे आए पेपर जांचे नही जायेंगे । ६. सभी जवाब अभ्यासक्रम के आधार पर ही लिखना है । ७. जिस महिने का प्रश्न पत्र है, उसके बाद के महिने की २५ ता. को आपके मार्क्स तथा सही उत्तर इन्टरनेट पर दे दिये जायेंगे, उसके बाद आए हुये उत्तर पत्र स्वीकृत नही होंगे तथा फोन पर जवाब नही दिया जायेगा । ८. उत्तर पत्र में अभ्यासक्रम का नंबर लिखना जरुरी है ।

प्रश्न नं. १ रिक्त स्थान की पूर्ति करो - २०

१. उदयपुर संघ ने चरित्रनायक को .... पद से विभुषित किया ।
२. .... के बीज समान बंध छेद से सिद्ध परमात्मा की उर्ध्वगति होती है ।
३. दंडक की रचना के समय...................... का पुण्यवंत साम्राज्य प्रवर्तमान था ।
४. सच्चा रुप देह में नहीं...................... के स्वरुप में है ।
५. नारकी से असंख्यात गुण अधिक...................... जीव है ।
६. सनत् कुमार चक्रवर्ती को छ खंड के वैभव से...................... सुन्दर भासित होने लगा ।
७. जिनके नाम मंत्र और अक्षरों की .... पूर्वक स्तवीत जया देवी नमन करने वालो को शांति प्रदान करती है ।
८. नेपाल देश में भद्रबाहु स्वामी...................... साधना कर रहे थे ।
९. अनेक .... आचार्य अनेक प्रकार के मुक्ति को मानते हैं ।
१०. चक्रवर्तीपद एवं इन्द्रपद को भोगने से जो सुख प्राप्त होता है उसे...................... कहते हैं ।
११. श्री जयशेखर सूरि कृत कल्पसूत्र सुखावबोध विवरण की प्रत...................... ने सुवर्ण अक्षरों से लिखवायी ।
१२. दुर्लभ ऐसे मुक्ति पद को परमपद को .... सिद्ध भगवंतो ने प्राप्त किया है ।
१३. गच्छ नायक धर्ममूर्तिसूरि का स्तूप खंभात के श्रेष्ठि .... ने कराया ।
१४. सिद्ध परमात्मा जब देह त्याग करते हैं, तब जिस संस्थान में होता है, वहीं संस्थान मुक्ति में सिद्ध जीवो के .... का होता है ।
१५. विघ्न रुपी बेले...................... से छेदी जाती है ।
१६. सिद्धशीला...................... आकार की है ।
१७. .... की चाहत भंवरे को मुक्त गगन में उडने नहीं देती ।
१८. गति सहायक...................... अलोक में न होने से अलोक में सिद्ध के जीव जा नहीं सकते ।
१९. दुःख टालना हो, सुख पाना हो तो .... बनने का पुरुषार्थ करें ।
२०. दुर्लभ मानव भव की प्राप्ति .... योग से प्राप्त हुई है ।

प्रश्न नं. २ एक शब्द में जवाब लिखो - १५

१. श्री कल्याणसागर सूरि के उपदेश से किसने पार्श्वनाथ भगवान के पाँच स्फटिकमय बिंब प्रतिष्ठित किये ?
२. आत्म रमणता का सुख किसका है ?
३. कहाँ के भव्य जिनालय निर्माण के लिये छसौ कुशल कारीगरों ने आठ वर्ष काम किया ?
४. किन मुनिराज का क्षुधा वेदनीय का जोरदार उदय था ?
५. श्री जिनेश्वर देव का पूजन करने से समस्त प्रकार के क्या नाश पाते हैं ?
६. किन जीवों की संख्या कम या उनसे अधिक उसकी जानकारी क्या कहलाती है ?
७. भोले हिरण शिकारी की बिछायी जाल का भोग बनता है वह किसकी परवशता का फल है ?
८. कैसे जीवों को परमपद अलभ्य है ?
९. माता नामिल देवी ने गर्भाधान के समय क्या निरखा था ?
१०. क्या विराम पाये तो अनंत सुख के धाम मोक्षपद की प्राप्ति हों ?
११. किसके श्रुत मद के परिणाम से इस भरत क्षेत्र में १४ पूर्व के रहस्य का और परंपरा से चौदह पूर्व का लोप हुआ ?
१२. भरत महाराजा ने किसे संदेश भेजकर आज्ञा स्वीकारने का निवेदन किया ?
१३. संस्कृत में भोज व्याकरण किसने रचा ?
१४. साधन को भी शस्त्र बना देने की ताकात कौन रखता है ?
१५. सुवर्ण गलाने के पात्र को क्या कहते हैं ?

प्रश्न नं. ३ नीचे दिये गये शब्दों के अर्थ लिखो - १०

१) कुलाल २) अप्पहिया ३) व्योम ४) मुक्खपयं ५) संस्तुता ६) अति ७) मनोज्ञ ८) शक्र ९) श्रुतार्णवात १०) एवं ११) भेया १२) विरय १३) तिर्यक १४) निउण १५) हि १६) अहिया १७) सीसेण १८) भवण १९) यायात् २०) सुलह

प्रश्न नं. ४ जोडियाँ लगाओ (सिर्फ 'B' के नंबर लिखो) - १०

A	B	A	B
१) आगरा	१) महा तपस्वी साथी मुनिओ	६) तप मद	६) चिदानंद मय
२) गुलेल पत्थर	२) अनो: पातनी	७) उत्कापात	७) पतंगा
३) चक्षुरिन्द्रिय गुलामी	३) अरुपी	८) श्री शांति स्तव	८) मांढा जिनालय
४) मुक्ति	४) तेउकाया	९) सिद्ध भगवंत	९) पूर्व प्रयोग
५) रायसी शाह	५) श्री मानदेव सूरि	१०) नामकर्म क्षय	१०) महावीर स्वामी

प्रश्न नं. ५ निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संख्या में लिखो - १०

१. वि.स.१६७५ वैशाख सुद ८ को पू. कल्याणसागर सूरि के उपदेश से कितने जिनबिम्बो की प्रतिष्ठा हुई ?
२. सिद्धशीला कितने योजन प्रमाण वाली हैं ?
३. जगडु शाह ने दान में कितनी मुद्रिकाये उछालकर अष्टान्हिका महोत्सव किया ?
४. प्रभु की वैराग्यमय देशना सुनकर भरत महाराजा के कितने भाईयों ने दीक्षा ली ?
५. अनादिकाल से जीव कितने दंडक में परिभ्रमण कर रहा है ?
६. मुक्तात्मा की उर्ध्वगति के हेतु कितने हैं ?
७. पू. कल्याणसागर सूरि रचित कितने ग्रंथो का उल्लेख अभ्यास में है ?
८. शांतिस्तव में कुल कितने गाथा हैं ?
९. चौदहवें गुणस्थान में एक समय बाकी हो तब कितनी प्रकृति सता में रहती है ?
१०. वर्धमान-पद्मसिंह कितने ओशवालों के साथ जामनगर आकर बसे ?

प्रश्न नं. ६ नीचे के वाक्य सही (✓) हैं या गलत (×) बताओ - १०

१. सनत चक्रवर्ती को भोग के बजाय त्याग से प्रित बंधी ।
२. कोडन कुमार बालक स्वरुप में चक्रवर्ती जैसा प्रभावशाली था ।
३. धवलचंद्र के शिष्य जिनहंस मुनि थे ।
४. शांति स्तव विधिपूर्वक अनुष्ठान करने वालों को जल वगैरह के भय से मुक्त करने वाला है ।
५. जैसे जैसे इन्द्रियां बढती जाती है, वैसे वैसे सुख की लालसाये भी बढती जाती है ।
६. हीरबाई ने संघ सहित शत्रुंजय की नव्वाणुं बार यात्रा कराई थी ।
७. सिद्ध परमात्मा की सिद्ध गति भी पूर्व प्रयोग से होती है ।
८. पू. कल्याणसागर सूरिजी के अंत्येष्ठि स्थल पर भुज संघ ने उनकी प्रतिमा स्थापित की ।
९. आहार के अजीर्ण से भी ज्ञान का अजीर्ण ज्यादा खतरनाक है ।
१०. वैमानिक देव भवनपति देवो से असंख्यात गुण अधिक हैं ।

प्रश्न नं. ७ नीचे के वाक्य किस पृष्ठ पर है वह पृष्ठ नंबर लिखो - १०

१. राजन ! दो घंटे पहले जो काया निरोगी थी वो अब तो रोगी बन गई है ।
२. संख्या में गिनती शक्य हो वहाँ तक संख्यात शब्द वापरते है ।
३. सूरि मानदेव भी शांति पद को पायें ।
४. बालक के पिता परदेश गये होने का बहाना बनाकर माता ने अपनी अनिच्छा व्यक्त की ?
५. आयुष्य कर्म का क्षय करने से सिद्धों की अक्षय गति है ।
६. वहाँ खड्डे में गिरकर स्वयं को बंधनग्रस्त बनाता है ।
७. दुर्भव्य जीवों को दुःख कष्ट से प्राप्त हो ऐसा यह पद है ।
८. उस प्रसंग पर समस्त नगर को भोजनार्थ निमंत्रित करने में आया था ।
९. अभी प्राप्त मानव भव की सुन्दर आराधना कर भवभ्रमण को मर्यादित कर दें ।
१०. सारे साधु भगवंत उत्साह से पाठ लेने लगे ।

प्रश्न नं. ८ अपनी भाषा में समझाओ - १५

१. मानवभव की दुर्लभता २) इन्द्रियों की गुलामी के करण अंजाम ३) तप मद
४. पू. कल्याणसागर सूरि ने सम्राट को बताया चमत्कार ५) सिद्ध गति.

उत्तर पत्र नीचे लिखे पते पर भेजिए :

शत्रुंजय अेकेडमी श्री पद्मप्रभस्वामी जैन मंदिर, स्टेशन रोड, चालिसगाँव - ४२४१०१ जिल्हा : जलगांव,
मो. ९०२८२४२४८४. सही परिणाम और सही जवाब के लिये वेब साईट www.shatrunjayacademy.com